Lecture No- (02)

Name of the college - A.P.S.M. College Barauni, Begusarai
L.N.M.U. Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T.)

Deptt - A.I.H. & C

Lession / Plan - B.A Part II (H) A.I.H.&C Paper IV

Date - 15-06-2021

Topic - नालंदा

मगध की प्राचीनतम राजधानी राजगृह से 5 मील दूर पर नालंदा नामक बौद्ध स्थान है, जो पटना से पचपन 55 मील दूरी पर स्थित है। नालंदा बौद्धों का प्रमुख तीर्थों में नही गिना जाता, पर बौद्ध साहित्य में इसका नाम बारंबार आता है। सारिपुत्र इसी के समीप पैदा हुआ था। चौथी सदी से नालंदा महाविहार के कारण इसकी ख्याति हो गई। जहाँ प्राध्यापकों ने वृहत्तर भारत में जाकर बौद्ध धर्म तथा साहित्य का प्रचार एवं प्रसार किया। बुद्ध भी वहाँ गये थे। इस कारण अशोक ने वहाँ स्तूप का निर्माण किया था। उसके भग्नावशेष महाविहार के पश्चिम दिशा में विस्तृत है। नालंदा के भव्य भवनों की योजना दर्शनीय है। एक ओर चैत्य (स्तूप) की पंक्तियाँ तथा दूसरी ओर संघाराम, विहार तथा विश्वविद्यालय के भवन स्थित है।

नालंदा का प्रधान स्तूप अपनी विशेषता रखता है कि इतनी ऊँची इमारत दूसरी नही है। इसके भग्नावशेष के परीक्षण से प्रकट होता है कि मध्य भाग में मूल स्तूप स्थित है। कालांतर में उसमें और आकार जोड़े गए। चारों तरफ पूजा स्तूप (votive stupa) दिखलाई पड़ते है। देखने से पता चलता है कि एक के बाद दूसरा स्तूपाकार बना। उसके बाद तीसरा, चौथा बनता रहा। इसकी परीक्षा यह बतलाती है कि मूलस्तूप की वृद्धि न P.T.O.

कर उसके अवशेष पर नया स्तूप बनाया गया। इस तरह सात सतहें निश्चित हो जाती हैं। यानी मूलस्तूप के ऊपर छह बार अन्य आकार बनते रहे। पहले तीन आकार मलवे में छिपे हैं। वे दृष्टिगत नहीं होते। बारह वर्ग फीट के स्थान पर सीमित हैं। पाँची बनावट विस्तृत ढंग से की गई थी। उस आवरण को स्थानीय रूप में देखा जा सकता है। पाँचवा, छठा, तथा सातवा आवरण पृथक-पृथक सीढ़ियों की स्थिति से प्रकट हो जाता है। स्तूप का पाँचवा आवरण आकर्षणयुक्त है, सुरक्षित है तथा प्रत्येक कोने में गुंबज बने हैं। इसकी दीवाल सीमेंट के द्वारा बनी आकृतियों (Stucco) से सुसज्जित है। सीढ़ी के एक ओर बुद्ध तथा बोधिसत्व की प्रतिमाएँ दीख पड़ती है। उस स्थान पर पूजा स्तूप भी बने हैं जिनके लेख छठी सदी के अक्षरों में लिखे हैं। सीमेन्ट द्वारा बनी मूर्तियाँ (Stucco figures) भी गुप्तकाल की है। अतएव पाँचवा आवरण पाँचवी सदी के पश्चात हुआ होगा। पिछले आवरण को तैयार करते समय स्तूप के अवशेष के चारों तरफ चतुर्भुजाकार दीवाल बनायी जाती जो पूर्व स्थित आकार को सँभाल ले। इस प्रकार दीवार खड़ी हो जाने पर पूर्व आकार तथा दीवार के मध्य भाग में मिट्टी-ईंट से भर दिया जाता था। इस बीच के स्थान में कई पूजा-स्तूप प्रकाश में आए हैं, जो पूर्व समय में निर्मित हुए थे। इस कारण कुछ भाग सामने है तथा कुछ अंश छिपे हैं। बीच के भाग की खुदाई से सारी बातें स्पष्ट हो जाती हैं। कई आवरण के कारण ही स्तूप का विस्तृत आकार हो गया। अनेक पूजा-स्तूप सामने ~~आते हैं~~ आए हैं।

इस प्रकार स्तूप की उत्तर दिशा में कई स्तूपों के भग्नावशेष दीख पड़ते हैं। उनके चबूतरे अलंकृत हैं तथा सीमेंट द्वारा मूर्तियाँ बनी हैं।

भारती कुमारी
A.D.J.C. BC
Date: 25-06-2021